

नया चाँद देखाने के लिये आधुनिक उपकरणों
की सहायता लेने में कुछ भी गलत नहीं है

﴿ لا حرج من الاستعانة بالأجهزة الحديثة لرؤية الهلال ﴾

[हिन्दी - Hindi - هندی]

मुहम्मद सालेह अल-मुनजिद

अनुवाद: अताउर्रहमान ज़ियाउल्लाह

2010 - 1431

islamhouse.com

﴿ لا حرج من الاستعانة بالأجهزة الحديثة لرؤية الهلال ﴾

« باللغة الهندية »

محمد صالح المنجد

ترجمة: عطاء الرحمن ضياء الله

2010 - 1431

islamhouse.com

بِسْمِ اللَّهِ الرَّحْمَنِ الرَّحِيمِ

बिस्मिल्लाहिर्हमानिर्हीम

मैं अति मेहरबान और दयालु अल्लाह के नाम से आरम्भ करता हूँ।

إن الحمد لله نحمده ونستعينه ونستغفره، ونعوذ بالله من شرور أنفسنا، وسيئات أعمالنا، من يهده الله فلا مضل له، ومن يضلل فلا هادي له، وبعد:

हर प्रकार की हम्द व सना (प्रशंसा और गुणगान) अल्लाह के लिए योग्य है, हम उसी की प्रशंसा करते हैं, उसी से मदद मांगते और उसी से क्षमा याचना करते हैं, तथा हम अपने नफ्स की बुराई और अपने बुरे कामों से अल्लाह की पनाह में आते हैं, जिसे अल्लाह तआला हिदायत दे दे उसे कोई पथभ्रष्ट (गुमराह) करने वाला नहीं, और जिसे गुमराह कर दे उसे कोई हिदायत देने वाला नहीं। हम्द व सना के बाद :

नया चाँद देखाने के लिये आधुनिक उपकरणों की सहायता लेने में कुछ भी गलत नहीं है

प्रश्न:

क्या महीने की शुरूआत और उसके अंत के बारे में खगोलीय वेधशाला की गणना पर भरोसा करना जाइज़ है ? क्या मुसलमान के लिये नया चाँद देखने के लिए आधुनिक मशीनरी और उपकरणों का उपयोग करने की अनुमति है ? या उसे नग्न आँखों से ही देखना अनिवार्य है ?

उत्तर:

हर प्रकार की प्रशंसा और गुणगान अल्लाह के लिए योग्य है।

“महीने की शुरुआत के साबित होने के लिए धार्मिक (शरई) विधि यह है कि लोग नया चाँद देखें, और उचित यह है कि यह ऐसे लोगों के द्वारा हो जिनकी धर्मनिष्ठा और दृष्टि शक्ति विश्वास और भरोसे का पात्र हो। जब वे चाँद देख लें तो उसके अनुसार अमल करना अनिवार्य हो जाता है; यदि वह नया चाँद रमज़ान का चाँद है तो रोज़ा रखना, और अगर वह शव्वाल का चाँद है तो रोज़ा तोड़ देना (अनिवार्य हो जाता है)।

अगर चाँद नहीं देखा गया है तो खगोलीय वेधशाला की गणना पर भरोसा करना जाइज़ नहीं है। लेकिन यदि चाँद देखा गया है चाहे वह खगोलीय वेधशाला के द्वारा ही क्यों न हो, तो उसका ऐतिबार किया जायेगा, क्योंकि वह नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम के इस फरमान के सामान्य अर्थ के अंतर्गत आता है : “जब तुम उसे देख लो तो रोज़ा रखो, और जब उसे देख लो तो रोज़ा तोड़ दो।”

परन्तु मात्र खगोलीय गणना पर अमल करना और उसपर भरोसा करना जाइज़ नहीं है।

जहाँ तक नया चाँद देखने के लिये दूरबीन के उपयोग करने का प्रश्न है तो इसमें कोई बात नहीं है, लेकिन ऐसा करना अनिवार्य नहीं है। क्योंकि सुन्नत से यही बात प्रत्यक्ष होती है कि व्यावहारिक रूप से देखने पर भरोसा करना है उसके अलावा दूसरी चीज़ पर नहीं। किन्तु यदि दूरबीन का इस्तेमाल किया जाये और कोई विश्वस्त आदमी उसे देखे तो उसके देखने पर अमल किया जायेगा। प्राचीन समय में लोग इसका उपयोग करते थे, जबकि वे शाबान की तीसवीं रात और रमज़ान की तीसवीं रात को मिनारों पर चढ़ते थे और इस दूरबीन के द्वारा नया चाँद देखते थे।

बहरहाल, जब भी किसी माध्यम से चाँद का दिखायी पड़ना साबित हो जाये तो उस दृष्टि (दर्शन) के अनुसार अमल करना अनिवार्य हो जाता है,

क्योंकि नबी सल्लल्लाहु अलैहि व सल्लम का यह फरमान सामान्य है :
“जब तुम उसे देख लो तो रोज़ा रखो, और जब उसे देख लो तो रोज़ा तोड़ दो।” (फज़ीलतुश़ैख़ मुहम्मद बिन उसैमीन रहिमहुल्लाह “फतावा उल-माइल बल-दिल हराम” पृ. 192, 193)

तथा हमने प्रश्न संख्या (1245) के उत्तर में इस मुद्दे के बारे में वैज्ञानिक अनुसंधान और फत्वा जारी करने की स्थायी समिति के फत्वा को उद्धृत किया है, जिसमें निम्नलिखित बातें वर्णित हैं : “नया चाँद देखने के लिए अवलोकन उपकरण (दूरबीन इत्यादि) की सहायता लेना जाइज़ है, लेकिन रमज़ानुल मुबारक के महीने की शुरुआत या रमज़ान के रोज़े के अंत को साबित करने के लिए खगोलीय विज्ञान (डेटा) पर भरोसा करना जाइज़ नहीं है।” (देखिये : फतावा स्थायी समिति 9/99)

इस प्रकार यह स्पष्ट हो जाता है कि वह आदमी जो यह दावा करता है कि हमारे विद्वान नया चाँद देखने के लिए आधुनिक उपकरणों का उपयोग करना हराम ठहराते हैं और उसे नग्न आँखों के द्वारा देखना अनिवार्य करार देते हैं, वह झूठा और आरोप लगाने वाला है।

हम अल्लाह तआला से प्रश्न करते हैं कि वह हमारे लिये सच को सच के रूप में प्रदर्शित कर दे और हमें उसका पालन करने में सक्षम बनाये, और हम पर झूठ को झूठ के रूप में स्पष्ट कर दे और हमें उससे बचने की शक्ति और सक्षमता प्रदान करे, और उसे हमारे ऊपर संदिग्ध न रखे कि हम पथ-भ्रष्ट हो जायें, और हमें मुत्तिकियों (संयमी लोगों) का अगुवा बना दे।

और अल्लाह तआला ही सर्वश्रेष्ठ ज्ञान रखने वाला है।

इस्लाम प्रश्न और उत्तर